Title-code: UPHIN-48963
E-mail: jksingh.hardoi@gmail.com
सत्य का असर
समाचार पत्र

15,11, 2023jksingh.hardoi@gmail.com
9956834016

कानपुर पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

ऊसर भूमियों में गेहूं की उत्पादन तकनीक अपनाकर करें समय से बुवाई:-डॉ खलील खान

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने ऊसर भूमियों में गेहूं उत्पादन की आधुनिक तकनीक विषय पर कृषको हेतु एडवाइजरी जारी की। डॉ खान ने बताया कि भारत में लगभग 6.73 मिलियन हेक्टेयर भूमि ऊषर प्रभावित है। जिसमें 3.77 मिलियन हेक्टेयर छारीय और 2.96 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र लवणीय है। उत्तर प्रदेश में 13.69 लाख हेक्टेयर भूमि ऊषर से प्रभावित है जिसमें मुख्य रूप से कानपुर नगर, कानपुर देहात, कन्नौज, इटावा, औरैया, उन्नाव, फर्रुखाबाद, कन्नौज,मैनपुरी सहित कई जनपद लवण तथा छार से प्रभावित है। उन्होंने बताया कि इन भूमियों में लवण सहनशील गेहूं की प्रजातियां एवं नवीनतम तकनीकों के संयोजन से उत्पादन में वृद्धि कर खाद्य सुरक्षा को सतत रूप से स्थाई करने में महत्वपूर्ण योगदान होगा। उन्होंने बताया कि उसर भूमि में हमेशा उचित नमी पर ही जुताई करें तथा बड़े-बड़े ढेलों को भुरभुरा कर दें तथा मृदा परीक्षण की संस्तुति के आधार पर 200 किलोग्राम जिप्सम प्रति हेक्टेयर अवश्य प्रयोग करें। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में बीज का जमाव कम होता है। अतः संस्तुति मात्रा से सवा गुना ज्यादा अर्थात 115 से 120 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से अवश्य प्रयोग करना चाहिए। बीज का शोधन कार्बेंडाजिम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधन करने के बाद किसान भाई बुवाई करें। डॉक्टर खान ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि वह उसर भूमियों में गेहूं की बुवाई 20 नवंबर तक अवश्य कर दें। बुवाई के दिनों में औसत तापमान 20 डिग्री सेल्सियस उत्तम होता है । डॉक्टर खान ने बताया कि बीज 5 सेंटीमीटर से अधिक गहराई पर न डालें। उसर भूमियों हेतु गेहूं की प्रजातियां की आर एल 210 एवं के आर एल 213 सर्वोत्तम है। उन्होंने बताया कि इन प्रजातियों का चयन कर किसान भाई उसर भूमियों में बुवाई कर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

जागरण www.jagran.com

न पर छाई
र्दी भी बढ़ी

। कानपुर : दीपावली
ने भी पलटी मारी है।
ले 32 डिग्री से ऊपर
टकर 27 डिग्री के
। इससे सुबह-शाम
र्दी भी बढ़ गई है।
रे दिन आसमान में
र रहे और सुबह भी
के साथ हुई। मौसम
अनुसार आने वाले
न और नीचे जाने

आजाद कृषि एवं
विद्यालय के कृषि
डा. एसएन सुनील
र बंगाल की खाड़ी
व का क्षेत्र विकसित
ह से हिमालय क्षेत्र
दानी क्षेत्रों की ओर
रही हैं। तापमान
जह से कोहरे और
बन रहा है। अगले
दौरान आसमान में
रहेंगे। दिन का
25 डिग्री से नीचे

'तकनीक से ऊसर भूमि पर उपजाएं गेहूं की फसल'

जागरण संवाददाता, कानपुर देहात : उत्पादन तकनीकी के माध्यम ऊसर भूमि पर गेहूं की फसल उपजाई जा सकेगी। नई तकनीकी खोज दलीप नगर के कृषि विज्ञानियों ने की है। साथ ही मृदा विज्ञानी डा. खलील खान ने किसानों की सुविधा के लिए एडवाइजरी जारी की है।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डा. आनंद कुमार सिंह के निर्देशन में मंगलवार दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के मृदा विज्ञानी डा. खलील खान ने ऊसर भूमि पर गेहूं उत्पादन की आधुनिक तकनीक की विशेषता के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि देश में करीब 6.73 मिलियन हेक्टेयर भूमि ऊसर प्रभावित है। इसमें 3.77 मिलियन हेक्टेयर क्षारीय और 2.96 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र लवणीय है। उत्तर प्रदेश में 13.69 लाख हेक्टेयर

नई तकनीक से ऊसर भूमि पर इस तरह लहलहाएगी गेहूं फसल • सौ. डा. खलील खान

भूमि ऊसर से प्रभावित है जिसमें मुख्य रूप से कानपुर नगर, कानपुर देहात, कन्नौज, इटावा, औरैया, उन्नाव, फर्रुखाबाद, कन्नौज, मैनपुरी सहित कई जिले लवण व क्षार से प्रभावित हैं। उन्होंने बताया कि लवण सहनशील गेहूं की प्रजातियां एवं नवीनतम तकनीकों के उपयोग से उत्पादन में वृद्धि होगी। ऊसर भूमि की उचित नमी पर ही जोताई करें और बड़े बड़े ढेलों को भुरभुरा कर दें। साथ ही 200 किलोग्राम जिप्सम का प्रति हेक्टेयर अवश्य प्रयोग करें। मृदा विज्ञानी ने बताया कि ऊसर भूमि में बीजों का जमाव कम होता है जिसके चलते सवा गुना ज्यादा (115 से 120 किलोग्राम) बीज प्रति हेक्टेयर की दर से अवश्य प्रयोग करना उचित होगा। ऊसर भूमि के लिए गेहूं की आरएल 210 एवं केआरएल 213 प्रजातियां सर्वोत्तम है। बीज का शोधन कार्बेंडाजिम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज हर हाल में 20 नवंबर तक बोआई कर दें।

Uttarakhand State Disaster Management Authority Secretariat Campus,
04-Subhash Road, Dehradun-248001

No-2008/USDMA- E-56921 (2023) Dated 14.11.2023

PUBLIC NOTICE

This is to inform that **Uttarakhand State Disaster Management Authority** (USDMA) is organizing **6th World Congress on Disaster Management** (6th WCDM) at Dehradun from November 28 to December 1, 2023 in collaboration with Uttarakhand Council for Science and Technology (UCOST) and DMISC. **An exhibition of disaster risk reduction related technologies and products** is being organized at the conference venue as a part of the 6th WCDM.
Parties interested in showcasing their products and technologies are invited to participate in this exhibition. For further details interested parties may contact the Convener, 6th WCDM (+91 78932 22289) or Dr. Pooja Rana, Planner, USDMA (+91 76006 73987) and e-mail the same at usdmaac@gmail.com.

Additional CEO
(Operations) USDMA

अभियन्ता,
विभाग हमीरपुर

दिनांक :-04.11.2023

द्वितीय आमंत्रण)

4	5	6	7
14.00	1.40	1000.00	15 दिन

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता

Sign in to edit and save changes to this file.

(हिन्दी दैनिक) R.N.I. No. Utthin/2018/76731

(गांव देहात की खबर, शहर पर भी नजर)

दि ग्राम टुडे

उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश से एक साथ प्रसारित

वर्ष : 04 अंक : 311 देहरादून, बुधवार, 15 नवम्बर 2023 मूल्य : 2 रुपये पृष्ठ : 8

ऊसर भूमियों में गेहूं की उत्पादन तकनीक अपनाकर करें समय से बुवाई..डॉ खलील खान

दि ग्राम टुडे,कानपुर। (संजय मौर्य)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने ऊसर भूमियों में गेहूं उत्पादन की आधुनिक तकनीक विषय पर कृषको हेतु एडवाइजरी जारी की।

डॉ खान ने बताया कि भारत में लगभग 6.73 मिलियन हेक्टेयर भूमि ऊषर प्रभावित है। जिसमें 3.77 मिलियन हेक्टेयर छारीय और 2.96 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र लवणीय है। उत्तर प्रदेश में 13.69 लाख हेक्टेयर भूमि ऊषर से प्रभावित है जिसमें मुख्य रूप से कानपुर नगर, कानपुर देहात, कन्नौज, इटावा, औरैया, उन्नाव, फर्रुखाबाद, कन्नौज,मैनपुरी सहित कई जनपद लवण तथा छार से प्रभावित है। उन्होंने बताया कि इन भूमियों में लवण सहनशील गेहूं की प्रजातियां एवं नवीनतम तकनीकों के संयोजन से उत्पादन में वृद्धि कर खाद्य सुरक्षा को सतत रूप से स्थाई करने में महत्वपूर्ण योगदान होगा। उन्होंने बताया कि उसर भूमि में हमेशा उचित नमी पर ही जुताई करें तथा बड़े-बड़े ढेलों को भुरभुरा कर दें तथा मृदा परीक्षण की संस्तुति के आधार पर 200 किलोग्राम जिप्सम प्रति हेक्टेयर अवश्य प्रयोग करें। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में बीज का जमाव कम होता है। अतः संस्तुति मात्रा से सवा गुना ज्यादा अर्थात 115 से 120 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से अवश्य प्रयोग करना चाहिए। बीज का शोधन कार्बेंडाजिम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधन करने के बाद किसान भाई बुवाई करें। डॉक्टर खान ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि वह उसर भूमियों में गेहूं की बुवाई 20 नवंबर तक अवश्य कर दें। बुवाई के दिनों में औसत तापमान 20 डिग्री सेल्सियस उत्तम होता है । डॉक्टर खान ने बताया कि बीज 5 सेंटीमीटर से अधिक गहराई पर न डालें। उसर भूमियों हेतु गेहूं की प्रजातियां की आर एल 210 एवं के आर एल 213 सर्वोत्तम है। उन्होंने बताया कि इन प्रजातियों का चयन कर किसान भाई उसर भूमियों में बुवाई कर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 15 अंक : 134 कानपुर, बुधवार 15 नवम्बर 2023 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

ऊसर भूमियों में गेहूं की उत्पादन तकनीक अपनाकर करें समय से बुवाई

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने ऊसर भूमियों में गेहूं उत्पादन की आधुनिक तकनीक विषय पर कृषको हेतु एडवाइजरी जारी की। डॉ खान ने बताया कि भारत में लगभग 6.73 मिलियन हेक्टेयर भूमि ऊषर प्रभावित है। जिसमें 3.77 मिलियन हेक्टेयर छारीय और 2.96 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र लवणीय है। उत्तर प्रदेश में 13.69 लाख हेक्टेयर भूमि ऊषर से प्रभावित है जिसमें मुख्य रूप से कानपुर नगर, कानपुर देहात, कन्नौज, इटावा, औरैया, उन्नाव, फर्रुखाबाद, कन्नौज,मैनपुरी सहित कई जनपद लवण तथा छार से प्रभावित है। उन्होंने बताया कि इन भूमियों में लवण सहनशील गेहूं की प्रजातियां एवं नवीनतम तकनीकों के संयोजन से उत्पादन में वृद्धि कर खाद्य सुरक्षा को सतत रूप से स्थाई करने में महत्वपूर्ण योगदान होगा। उन्होंने बताया कि उसर भूमि में हमेशा उचित नमी पर ही जुताई करें तथा बड़े-बड़े ढेलों को भुरभुरा कर दें तथा मृदा परीक्षण की संस्तुति के आधार पर 200 किलोग्राम जिप्सम प्रति हेक्टेयर अवश्य प्रयोग करें।

मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में बीज का जमाव कम होता है। अत: संस्तुति मात्रा से सवा गुना ज्यादा अर्थात 115 से 120 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से अवश्य प्रयोग करना चाहिए। बीज का शोधन कार्बेंडाजिम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधन करने के बाद किसान भाई बुवाई करें। डॉक्टर खान ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि वह उसर भूमियों में गेहूं की बुवाई 20 नवंबर तक अवश्य कर दें। बुवाई के दिनों में औसत तापमान 20 डिग्री सेल्सियस उत्तम होता है । डॉक्टर खान ने बताया कि बीज 5 सेंटीमीटर से अधिक गहराई पर न डालें। उसर भूमियों हेतु गेहूं की प्रजातियां की आर एल 210 एवं के आर एल 213 सर्वोत्तम है। उन्होंने बताया कि इन प्रजातियों का चयन कर किसान भाई उसर भूमियों में बुवाई कर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

हिंदुस्तान 15/11/2023

'बंजर खेतों में करें वैज्ञानिक विधि से गेहूं की खेती'

कानपुर। बंजर खेतों में भी अब गेहूं की अच्छी पैदावार हो सकती है। किसानों को इन खेतों में वैज्ञानिक पद्धति से खेती करनी होगी।

यह जानकारी चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि (सीएसए) के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने दी। उन्होंने विवि की ओर से आयोजित कार्यशाला में किसानों को बंजर भूमि में अच्छी पैदावार को लेकर जानकारी दी। विवि से संबद्ध दिलीप नगर कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि उप्र में 13.69 लाख हेक्टेयर भूमि बंजर हैं। इन भूमियों में गेहूं की खेती के लिए 20 नवंबर तक बुआई अवश्य कर दें।

'तकनीक से ऊसर भूमि पर उपजाएं गेहूं की फसल'

जागरण संवाददाता, कानपुर देहात : उत्पादन तकनीकी के माध्यम ऊसर भूमि पर गेहूं की फसल उपजाई जा सकेगी। नई तकनीकी खोज दलीप नगर के कृषि विज्ञानियों ने की है। साथ ही मृदा विज्ञानी डा. खलील खान ने किसानों की सुविधा के लिए एडवाइजरी जारी की है।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डा. आनंद कुमार सिंह के निर्देशन में मंगलवार दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के मृदा विज्ञानी डा. खलील खान ने ऊसर भूमि पर गेहूं उत्पादन की आधुनिक तकनीक की विशेषता के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि देश में करीब 6.73 मिलियन हेक्टेयर भूमि ऊसर प्रभावित है। इसमें 3.77 मिलियन हेक्टेयर क्षारीय और 2.96 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र लवणीय है। उत्तर प्रदेश में 13.69 लाख हेक्टेयर भूमि ऊसर से प्रभावित है जिसमें मुख्य रूप से कानपुर नगर, कानपुर देहात, कन्नौज, इटावा, औरैया, उन्नाव, फर्रुखाबाद, कन्नौज, मैनपुरी सहित कई जिले लवण व क्षार से प्रभावित हैं। उन्होंने बताया कि लवण सहनशील गेहूं की प्रजातियां एवं नवीनतम तकनीकों के उपयोग से उत्पादन में वृद्धि होगी। ऊसर भूमि की उचित नमी पर ही जोताई करें और बड़े बड़े ढेलों को भुरभुरा कर दें। साथ ही 200 किलोग्राम जिप्सम का प्रति हेक्टेयर अवश्य प्रयोग करें। मृदा विज्ञानी ने बताया कि ऊसर भूमि में बीजों का जमाव कम होता है जिसके चलते सवा गुना ज्यादा (115 से 120 किलोग्राम) बीज प्रति हेक्टेयर की दर से अवश्य प्रयोग करना उचित होगा। ऊसर भूमि के लिए गेहूं की आरएल 210 एवं केआरएल 213 प्रजातियां सर्वोत्तम है। बीज का शोधन कार्बेंडाजिम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज हर हाल में 20 नवंबर तक बोआई कर दें।

नई तकनीक से ऊसर भूमि पर इस तरह लहलहाएगी गेहूं फसल● सौ. डा. खलील खान

ऊसर खेतों में 20 से पहले करें गेहूं की बोआई

जासं, कानपुरः गेहूं बोआई के लिए मौसम अनुकूल है। कृषि मौसम विज्ञानियों के अनुसार दिन और रात के तापमान में आ रही कमी गेहूं बोआई के लिए ठीक है। अगले सप्ताह भर में ऊसर खेतों में भी गेहूं की बोआई कर लेनी चाहिए।

गेहूं की बोआई के लिए दिन का तापमान 25 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रहना जरूरी है। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के विज्ञानियों के अनुसार 18 से 25 डिग्री के तापमान को आदर्श स्थिति माना जाता है। बीते चार दिन के दौरान दिन का अधिकतम तापमान पांच डिग्री सेल्सियस तक नीचे आया है। नौ नवंबर को शहर का अधिकतम तापमान 32.2 डिग्री था। शुक्रवार से तापमान में कमी होने लगी और मंगलवार को अधिकतम तापमान 26.8 डिग्री पर पहुंच गया। रात का तापमान भी घटकर 12.8 डिग्री हो गया है। सीएसए के प्रो. आर के यादव ने बताया कि गेहूं की बोआई के लिए यह आदर्श स्थिति है।

उत्तर प्रदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

स्वामी प्रसाद मौर्य के खिलाफ हजरतगंज... 05

डगा के पास हरदोई ब्रांच नहर में चहल कदमी करते... 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्ष: 15 | अंक: 34
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
बुधवार | 15 नवंबर, 2023

ऊसर भूमियों में गेहूं के उत्पादन की आधुनिक तकनीक के लिए दी जानकारी

जन एक्सप्रेस | कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में मंगलवार को कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ.खलील खान ने ऊसर भूमियों में गेहूं उत्पादन की आधुनिक तकनीक विषय पर किसानो के लिए एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि भारत में लगभग 6.73 मिलियन हेक्टेयर भूमि ऊषर प्रभावित है। जिसमें 3.77 मिलियन हेक्टेयर छारीय और 2.96 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र लवणीय है। उत्तर प्रदेश में 13.69 लाख हेक्टेयर भूमि ऊषर से प्रभावित है जिसमें मुख्य रूप से कानपुर नगर, कानपुर देहात, कन्नौज, इटावा, औरैया, उन्नाव, फर्रुखाबाद, कन्नौज,मैनपुरी सहित कई जनपद लवण तथा छार से प्रभावित है। उन्होंने बताया कि इन भूमियों में लवण सहनशील गेहूं की प्रजातियां एवं नवीनतम तकनीकों के संयोजन से उत्पादन में वृद्धि कर खाद्य सुरक्षा को सतत रूप से स्थाई करने में महत्वपूर्ण योगदान होगा। उन्होंने बताया कि उसर भूमि में हमेशा उचित नमी पर ही जुताई करें तथा बड़े-बड़े ढेलों को भुरभुरा कर दें तथा मृदा परीक्षण की संस्तुति के आधार पर 200 किलोग्राम जिप्सम प्रति हेक्टेयर अवश्य प्रयोग करें। डॉ.खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में बीज का जमाव कम होता है। अतः संस्तुति मात्रा से सवा गुना ज्यादा अर्थात 115 से 120 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से अवश्य प्रयोग करना चाहिए। बीज का शोधन कार्बेंडाजिम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधन करने के बाद किसान बुवाई करे। उन्होंने किसानों को उसर भूमियों में गेहूं की बुवाई 20 नवंबर तक करने की सलाह दी। जिससे की फसल अच्छी हो।

ऊसर भूमियों में गेहूं की उत्पादन तकनीक अपनाकर करें समय से बुवाई- डॉ खलील खान

दैनिक कानपुर उजाला

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने ऊसर भूमियों में गेहूं उत्पादन की आधुनिक तकनीक विषय पर कृषको हेतु एडवाइजरी जारी की। डॉ खान ने बताया कि भारत में लगभग 6.73 मिलियन हेक्टेयर भूमि ऊषर प्रभावित है। जिसमें 3.77 मिलियन हेक्टेयर छारीय और 2.96 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र लवणीय है। उत्तर प्रदेश में 13.69 लाख हेक्टेयर भूमि ऊषर से प्रभावित है जिसमें मुख्य रूप से नगर, कानपुर देहात, कन्नौज, इटावा, औरैया, उन्नाव, फर्रूखाबाद, कन्नौज, मैनपुरी सहित कई जनपद लवण तथा छार से प्रभावित है। उन्होंने बताया कि इन भूमियों में लवण सहनशील गेहूं की प्रजातियां एवं नवीनतम तकनीकों के संयोजन से उत्पादन में वृद्धि कर खाद्य सुरक्षा को सतत रूप से स्थाई करने में महत्वपूर्ण योगदान होगा। उन्होंने बताया कि उसर भूमि में हमेशा उचित नमी पर ही जुताई करें तथा बड़े.बड़े ढेलों को भुरभुरा कर दें तथा मृदा परीक्षण की संस्तुति के आधार पर 200 किलोग्राम जिप्सम प्रति हेक्टेयर अवश्य प्रयोग करें। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में बीज का जमाव कम होता है। डॉ खान ने बताया कि बीज 5 सेंटीमीटर से अधिक गहराई पर न डालें। उसर भूमियों हेतु गेहूं की प्रजातियां की आर एल 210 एवं के आर एल 213 सर्वोत्तम है। उन्होंने बताया कि इन प्रजातियों का चयन कर किसान भाई उसर भूमियों में बुवाई कर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।